सं. भ्रो.वि./भ्रम्बाला/123-85/36772 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. माजरी को केंडिट एण्ड सर्विस सोसायटी लि॰ माजरी, तह. गृहला, जिला कुरुक्षेत्र के श्रीमक श्री हरभजन लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांष्टनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3(44)84-3श्रम, दिनांक 18 श्रप्रेल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णश एवं पंचाट तीन मास में देने के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री हरभजन लाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो. वि/भ्रम्बाला/203-84/36778. —चुंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं हरियाणा को प्रदिव ऋडिट एण्ड सर्विस सोसाईटी लि थाना, तह. पहेंबा, जिला कुरुक्षत्र के श्रमिक श्री रणधीर सिंह तथा उसके प्रबन्ध कों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत निर्दिग्ट वेरना वांटनीय समझते हैं ;-

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपोल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिम्चना सं. 3(44) 84-3-धम, दिनांक 18 ग्रिपेल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम् न्यायालय, भ्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से स्थानत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

वया श्री रणधीर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 9 सितम्बर, 1985

सं. ग्रो.बि./65-85/36875.—चंिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. (1) परिवर्डन ग्रायुक्त हरियाणा चण्डीगढ, (2) जनरल मनेजर हरियाणा रोड़वेज कैथल के श्रमिक श्री नाथू सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोणिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछिनीय समझते हैं ; इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947 की धारा 10की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्टिस्चना सं. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिष्टिनियम की धारा 7 के श्रिष्टीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से ससंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री नथू सिंह की सेवाग्रों का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहृत का हकदार है ।
सं ग्रों.वि./हिसार/49-85/36882.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मारिकट कमेटी, हिसार, के श्रीमिक श्री बिशन सरूप तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बंधित नीचे लिखा मामला न्यायानेर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री विशन सरूप की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठींक है? यदि नहीं; तो वह किस राहत का हकदार है ?